❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के अवसर
MMTC द्वारा शुद्ध चांदी के विशेष सिक्के
999.9 टंच 10 ग्राम MMTC के प्रमाणपत्र सहित
आकर्षक पैकिंग में उपलब्ध
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें9650183336, 9540040339

वर्ष 47, अंक 5 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 18 दिसम्बर, 2023 से रविवार 24 दिसम्बर, 2023
विक्रमी सम्वत् 2080 सृष्टि सम्वत् 1960853124
दयानन्दाब्द : 200 पृष्ठ 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें-www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती एवं आर्यसमाज स्थापना के 150वें वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों हेतु

नई दिल्ली में दो दिवसीय विशेष बैठक सम्पन्न

ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति के निर्देशन में प्रान्तीय सभाओं, प्रादेशिक सभा, देश के प्रमुख आर्य संगठनों, दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, वेद प्रचार मंडलों, शिक्षण संस्थानों, आर्य वीर-वीरांगना दल के अधिकारियों के साथ आर्य संन्यासियों, वैदिक विद्वानों, पुरोहितों एवं पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों की रही उत्साहजनक भागीदारी

200वीं जयन्ती पर टंकारा में होगा प्रेरणाप्रद, ऐतिहासिक और भव्य

ज्ञान ज्योति पर्व - स्मरणोत्सव महासम्मेलन

10-12 फरवरी, 2024 : ऋषि जन्मभूमि टंकारा (गुज०)

समस्त आर्य समाजें, प्रांतीय सभाएँ और शिक्षण संस्थाएं आयोजन को सफल बनाने में दे अपना पूर्ण योगदान
- सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

महर्षि के 200वें जन्मोत्सव पर सम्पूर्ण आर्यसमाज के संगठनों का एक साथ खड़े होना मेरे स्वप्न की पूर्ति
- पद्मश्री पूनम सूरी, प्रधान, प्रादेशिक सभा

महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती देश-विदेश की युवा पीढ़ी को संस्कारित करने का स्वर्णिम अवसर
- सुरेन्द्र कुमार आर्य, अध्यक्ष, ज्ञान ज्योति महोत्सव समिति

टंकारा आयोजन के अध्यक्ष पद्मश्री पूनम सूरी जी का सन्देश-
ऋषि हमारा, दयानन्द प्यारा - चलो टंकारा

15 एकड़ भूमि पर टंकारा में बनेगा ज्ञान ज्योति तीर्थ
- योगेश मुंजाल, कार्य. प्रधान, टंकारा ट्रस्ट

टंकारा आयोजन के साथ-साथ सम्पूर्ण योजनावधि के लिए अन्य अनेक समितियों का हुआ गठन

-: बैठक के मुख्य बिन्दु :-

- ★ महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के टंकारा पधारने की संभावना
- ★ आर्यसमाज के गुरुकुलों, अनाथालयों, आर्य विद्यालयों और 2500 डीएवी स्कूलों के लगभग 40 लाख विद्यार्थियों को एक मंच पर लाने का होगा प्रयास
- ★ अमेरिका में 18-20 जुलाई 2024 तक होगा विशाल आर्य महासम्मेलन
- ★ मुम्बई में अप्रैल 2025 में मनाया जाएगा 150वां आर्य समाज स्थापना दिवस
- ★ दिल्ली में अक्तूबर 2025 में होगा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
- ★ नए साहित्य का हुआ विमोचन - गले लगाइए-रिश्ते बचाइए, प्राकृतिक खेती अपनाइए, युवा पीढ़ी को नशे से बचाइए, अंधविश्वास निवारण, और जानें दयानन्द को उन्हीं की लेखनी से
- ★ 200 परिवारों से जनसम्पर्क अभियान का शुभारम्भ
- ★ वेबसाइट www.maharshidayanand.com का लोकार्पण
- ★ तीन मिसकॉल सेवाओं का शुभारम्भ -
  - आर्य समाज द्वारा संचालित सेवा योजनाओं की जानकारी 8750200300
  - महर्षि दयानन्द की जीवनी एवं उनसे जुड़ी समस्त जानकारी 8447200200
  - यज्ञ विषयक सम्पूर्ण जानकारी - 9868474747
- ★ आर्य समाज के इतिहास लेखन का होगा शुभारंभ - डॉ. राकेश कुमार आर्य जी (9911169717) के संयोजन में समिति गठित
- ★ विभिन्न विद्यालयी प्रतियोगिताओं एवं कॉमिक प्रतियोगिता का होगा शुभारम्भ
- ★ दिल्ली से आरम्भ होगी ज्ञान ज्योति यात्रा एवं जन जागरण यात्रा
- ★ घर-घर वेद ज्ञान पहुँचाने के लिए वेद परिवार निर्माण योजना का शुभारम्भ - श्रीमती सुरेखा चोपड़ा जी (9810936570) संयोजिका मनोनीत

- सम्बन्धित शेष सूचना एवं चित्र पृष्ठ 5 एवं 6 पर

ओ३म्

महर्षि दयानन्द के अनन्य शिष्य, महान राष्ट्रभक्त, शिक्षाविद् आर्य समाज के नेता, स्वतंत्रता सेनानी, अमर बलिदानी

स्वामी श्रद्धानन्द

97 वाँ बलिदान दिवस

सोमवार 25 दिसम्बर 2023

अमर हुतात्मा
स्वामी श्रद्धानन्द

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयंती के विशेष आयोजनों की श्रृंखला में

भव्य शोभायात्रा व सार्वजनिक सभा

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, दिल्ली
यज्ञ : प्रातः 8 से 9:30 बजे
शोभायात्रा का प्रारम्भ : प्रातः 10 बजे

सार्वजनिक सभा : मध्याह्न 12:30 से 3:30 बजे
रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली-2

इस अवसर पर वैदिक विद्वानों एवं आर्य कार्यकर्त्ताओं को स्मृति पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जायेगा

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर हजारों की संख्या में पहुंचकर संगठन का परिचय दें

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य (पंजी०)
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

देववाणी-संस्कृत

दैव्य जन और मनुष्य जन

वेद-स्वाध्याय

यत्किं चेदं वरुण दैव्ये जनेऽभिद्रोहं मनुष्याश्चरामसि।
अचित्ती यत्तव धर्मा युयोपिम मा नस्तस्मादेनसो देव रीरिषः।। - *अथर्व. 6/51/3*
ऋषिः **वसिष्ठः।।** देवता - **वरुणाः।।** छन्दः **पादनिचृज्जगती।।**

शब्दार्थ- वरुण = हे वरुण **मनुष्याः** = हम मनुष्य **दैव्ये जने** = तुझ दिव्य जन में **इदं यत् किंच अभिद्रोहम्** = यह जो कुछ द्रोह **चरामसि** = किया करते हैं और **अचित्तीः** = अज्ञान और असावधानता से **यत् तव धर्माः युयोपिम** = जो तेरे धर्मो का लोप किया करते हैं **देव** = हे देव **तस्मात् एनसः** = उस पाप के कारण **नः मा रीरिषः**= हमारा नाश मत करो।

विनय- हे वरुण! तुम जन हो तो दैव्य जन हो-पर हम गिरते-पड़ते उठने का यत्न करने वाले जन हैं। हे देव! हम मनुष्यों पर दया करो, हम तुम्हारी दया के पात्र हैं। हम बेशक तुम्हारा द्रोह करने वाले बड़े भारी अपराधी होते रहते हैं। तुम्हारे धर्मो का लोप करना सचमुच बड़ा द्रोह है। जो कुछ हमें मिल रहा है वह सब-कुछ तुम्हीं से मिल रहा है और वह सब इसीलिए मिल रहा है, क्योंकि तुम्हारे धर्म सत्य हैं, अखण्ड हैं। यदि तुम्हारे धर्म कभी खण्डित हो सकें तो तुम तुम न रहो, परन्तु इन्हीं तुम्हारे सत्यधर्मो को (जिनके कारण हमें यह सब-कुछ मिल रहा है) हम लोग अपने व्यवहार में लोप कर देते हैं। यह कितना द्रोह है? ये तुम्हारे सनातन धर्म हमारे व्यवहार में धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय आदि रूपों में प्रकट होते हैं, परन्तु हम इनका परिपालन न कर तुम सर्वदाता प्रभु के द्रोही होते रहते हैं। फिर भी हे देव! हमारी तुमसे प्रार्थना है कि हमें सहन करो, हमें कठोर दण्ड देकर हमारा नाश मत करो! क्योंकि यह सब धर्मभङ्ग हम जान-बूझकर नहीं करते। जो कुछ हमसे धर्म-लोप हाता है वह अज्ञान से, प्रमाद से, असावधानी से होता है। अब हम कभी जान-बूझकर अधर्माचरण में नहीं प्रवृत्त होते, पर ये अज्ञान की, असावधानी की भूलें होते रहना तो हम मनुष्यों के लिए अस्वाभाविक नहीं है। इसलिए हम तुम्हारी दया के पात्र हैं। वरुण राजन्! हम जानते हैं कि राजद्रोह बड़ा भारी अपराध है। तुम्हारे सच्चे, पूर्ण कल्याणमय राज्य का द्रोह करना आत्मघात करना है। अतएव अब हम अपनी शक्तिभर और जान-बूझकर तुम परम प्यारे का द्रोह कैसे कर सकते हैं? परन्तु तुम भी हमारे अज्ञान से किये अपराधों को क्षमा करो, किन्तु नहीं, तुमसे हम क्षमा के लिए क्यों कहें? तुम तो हमारा विनाश कर ही नहीं सकते। तुम जो भी कुछ करोगे हमारा कल्याण ही करोगे-यह निश्चित है। फिर तुमसे प्रार्थना तो इसलिए है कि इस द्वारा हम तुम्हारे कुछ और अधिक निकट हो जाएं, हमारा हृदय शुद्ध हो जाए, क्योंकि तुम्हारे आगे रो लेने से हृदय की शुद्धि हो जाती है और भविष्य के लिए धर्म-भङ्ग होने की सम्भावना और-और कम होती जाती है।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

छोटा परिवार-खुशहाल परिवार : क्या यही है वास्तविकता ? कितने खुशहाल हैं आप?

परिवार छोटे हुए या कार्पोरेट ने किया लोगों को अकेला?

आज 25 से 30 वर्ष पहले बच्चे क्या खेलते थे खो-खो, गिल्ली-डंडा, और पिठ्ठू गरम, छुपन छुपाई, रस्सा-कस्सी, आंख-मिचौली, चोर-सिपाही, कंचा गोली और आज बच्चे क्या खेलते हैं वीडियो गेम्स, बेबी डोल्स से लेकर किसी घर में बच्चा खेलता है टेडी बियर से फिर बार्बी डोल्स से। लेकिन अब एक सिस्टम के जरिये आगे आने वाले बच्चों से उनका फ्यूचर छीना जा रहा है, जिसके तहत सबसे पहले फैमिली खत्म करनी है! इंसान को पूरी तरह इंडिविजुअल में तोड़ना है, अकेला करना फिर उन्हें अपना माल बेचना है। यानि जन्म से लेकर मौत तक उसे अपना ग्राहक बनाना। अब सवाल है कि यह कौन करवा रहा है? और क्यों करवा रहा है? सीधा सा नाम मस्तिष्क में आएगा कॉरपोरेट।

मुनाफे के बाजार की इस साजिश अगर आप समझेंगे तो अपना माथा पकड लेंगे कि कैसे किस तरीके से पहले भारत के परिवार तोड़े जा रहे है फिर समाज और इसके बाद कैसे देश? कल्पना कीजिये और दो दशक पीछे चले जाइये, सोचिये! जब माँ किसी कारण बाहर गयी होती थी, तो घर में चाची, ताई, बुआ, भाभी या दादी कोई भी खाना बनाकर खिला देती थी। खेलना हो तो घर परिवार में पांच-सात बच्चे मिलकर खेल लेते थे, खुशी का प्रोग्राम हो तो सब परिवार रिश्तेदार मिलकर सारा घर में ही मामला सम्हाल लेते थे। मातम भी हो तो सब मिलकर एक दूसरे को दिलासा देते थे। शायद जन्म से लेकर खेल हो या शादी या फिर जीवन का अंत परिवार ही सब कुछ सम्हाल लेता था जिसमें समाज भी शामिल होता था। ...लेकिन आज सब कुछ बदल रहा है, बच्चे के खेलने के लिए टेडी बियर, वीडियो गेम्स, बेबी डोल्स, बार्बी डोल्स है, मोबाइल गेम्स से विडियो गेम्स है। घर में शादी है तो मेरिज होम है, वहां खाने की पर प्लेट के हिसाब से तय कर देते है, किसी को किसी की जरूरत नहीं, इसके अलावा माँ घर में नहीं है, तो ताई-चाची की जगह फूडपांडा है, जोमाटो-स्वेगी है। किसी कारण किसी प्रियजन कि मौत हो जाये तो चार लोगो की जरूरत नहीं है मोक्षिल डॉट कॉम जैसी कम्पनियां बाजार में उपलब्ध हैं, क्लिक कीजिये अर्थी से लेकर रोने-धोने वाले सब किराये पर आ जायेंगे।

आखिर यह सब कैसे बदला, आप सोच भी नहीं सकते। दरअसल कई दशक पहले अमेरिका दुनिया को गेंहू निर्यात करता था। हमारा देश भी लेता था, लेकिन अचानक फिर हरित क्रांति का दौर चला, दुनिया के बहुत देश अन्न पर आत्मनिर्भर हो गये, अमेरिका का गेंहू बेकार होने लगा तब यूएसए के कई उधोगपति एक साथ बैठे उन्होंने यहाँ प्लान तैयार किया, जिसमें पहला यह कि फास्टफूड तैयार किये जाये और दूसरा यह कि आखिर कैसे दुनिया के लोगों को अपने ऊपर डिपेंड किया जाये। फास्टफूड तो तैयार हो गया, लोग स्वाद या आलस में खरीदने भी लगे। लेकिन अभी समस्या थी लोग फेमली में रहते थे तो इन चीजों पर बहुत कम डिपेंड थे। सोना-चांदी एक बार खरीद लिया, मकान एक बार बनवा लिया, गाड़ी ली तो दस साल की छुट्टी। इसके बाद उनकी जेब से पैसा कैसे निकला जाये, प्लान तैयार हुआ। यानि इंडिविजुअल में तोड़कर फैमिली और समाज को खत्म करना है, जिससे जीवनयापन करने के लिए इंडिविजुअल लेवल पर डिमांड बढ़े। हर इंडिविजुअल का अपना घर हो, सारे जीवनयापन करने के टूल्स हर आदमी अपने खरीदे। आदमी जितना अकेला होगा उतनी बोरियत होगी, उतना ही वो मार्केट से मनोरंजन के लिए उत्पाद खरीदेगा! कुल मिलाकर इससे कॉर्पोरेट फर्म्स के पास बड़ी मात्रा में पैसा आएगा। हर पार्टी को फंड करेंगे और उस पार्टी को कंट्रोल करके उन देशों को कंट्रोल करेंगे। गरीब देशों को इस शर्त पर कर्जा मिलने लगा कि वो अपने यहाँ ज्वाइंट फेमिली को समाप्त करेंगे।

.....कल्पना कीजिये और दो दशक पीछे चले जाइये, सोचिये! जब माँ किसी कारण बाहर गयी होती थी, तो घर में चाची, ताई, बुआ, भाभी या दादी कोई भी खाना बनाकर खिला देती थी। खेलना हो तो घर परिवार में पांच-सात बच्चे मिलकर खेल लेते थे, खुशी का प्रोग्राम हो तो सब परिवार रिश्तेदार मिलकर सारा घर में ही मामला सम्हाल लेते थे। मातम भी हो तो सब मिलकर एक दूसरे को दिलासा देते थे। शायद जन्म से लेकर खेल हो या शादी या फिर जीवन का अंत परिवार ही सब कुछ सम्हाल लेता था जिसमें समाज भी शामिल होता था।....लेकिन आज सब कुछ बदल रहा है, बच्चे के खेलने के लिए टेडी बियर, वीडियो गेम्स, बेबी डोल्स, बार्बी डोल्स है, मोबाइल गेम्स से विडियो गेम्स है। घर में शादी है तो मेरिज होम है, वहां खाने की पर प्लेट के हिसाब से तय कर देते है, किसी को किसी की जरूरत नहीं, इसके अलावा माँ घर में नहीं है, तो ताई-चाची की जगह फूडपांडा है, जोमाटो-स्वेगी है। किसी कारण किसी प्रियजन कि मौत हो जाये तो चार लोगो की जरूरत नहीं है मोक्षिल डॉट कॉम जैसी कम्पनियां बाजार में उपलब्ध हैं, क्लिक कीजिये अर्थी से लेकर रोने-धोने वाले सब किराये पर आ जायेंगे।

70 के दशक में परिवार नियोजन जैसे फार्मूले लागू किये, छोटा परिवार-सुखी परिवार के नारे शुरू हुए। वही परिवार सुखी होंगे जो छोटे होंगे। अब इसके लिए एक और दो कमरों के फ्लैट बनने शुरू हुए। उनमें कोई भी माता-पिता, भाई-बहन, बुआ और बच्चों समेत नहीं रह सकता था तो परिवार टूटने लगे। कामकाजी लोग परिवार से अलग होने लगे। देखा-देखी 80 चीन भी वन चाइल्ड पॉलिसी ले आया।

जब भारत और चाइना जैसे देशों में परिवार छोटे हो रहे थे सिमट रहे थे, पश्चिमी देशों में लोग छोटे परिवारों में अवसाद कि स्थिति का सामना करने लगे थे। उनके बच्चे अकेले हो होने लगे थे या अकेलापन फील करने लगे थे। अब यहाँ से कई दशक पीछे चलिए, दक्षिणी केलोफोर्निया में रुथ हैड्लर नाम की एक महिला और उनके पति एलियट में एक गेराज वर्कशॉप में काम करते थे। उनकी एक बेटी थी बारबरा वो अकेली थी, उसका दूसरा भाई-बहन नहीं था, इस दम्पत्ति ने अपनी बेटी को एक कागज की गुडिया जैसी आकृति से बात करते खेलते देखा। एक मां के रूप में, रूथ हैड्लर यह देखकर एहसास हुआ कि ये मात्र एक खिलौना अकेले बच्चों पर प्रभाव डाल सकता है। उन्होंने एक गुडिया बनाई उसका नाम दिया बार्बी डॉल, वह अब उसके साथ अपना अकेलापन बाँटने लगी। जब यह किस्सा कई लोगों तक पहुंचा तो छोटे परिवार के लोग अपने इकलोते बेटे बेटियों के लिए इसकी डिमांड करने लगे। रुथ हैड्लर और उनके पति एलियट ने 1945 में खिलौना कम्पनी मेटेल की स्थापना की और सिंगल बच्चो को गुडिया बेचने लगे।

सोचिये अगर उनकी बेटी बार्बी के पास दादा-दादी, नाना-नानी या भाई-बहन होते तो उसे किसी गुड़ियाँ की जरूरत न होती, लेकिन बाद में यह मज़बूरी एक बहुत बड़े बिजनेस में बदल गयी। फिर तो बेबी डॉल्स और भालू जैसा खिलौना जिसे टेडी बियर कहते हैं, उनकी डिमांड बढ़ने लगी।

- शेष पृष्ठ 6 पर

साप्ताहिक स्वाध्याय

खाण्डव वन

गतांक से आगे –

जब तक इस्लाम का प्रचार तलवार के जोर से होता रहा, हिन्दू-धर्म भी उससे बचने के लिए अपने कोट के चारों ओर खाइयां खोदता रहा, परन्तु अकबर तथा उसके दो उत्तरवर्ती बादशाहों ने गहरे शान्त उपायों से इस्लाम की जड़ पाताल में पहुंचाने का उद्योग किया। तब ऐसे भक्तजन उत्पन्न हुए जिन्होंने हिन्दू-मुसलमानों के परस्पर भेदों को दूर करके एकेश्वरवाद के झण्डे के तले जाने का यत्न किया। फिर जब औरंगजेब ने शान्त नीति का परित्याग किया, तब उत्तर और दक्षिण में हिन्दू धर्म तलवार लेकर उठ खड़ा हुआ, यह स्मरण रखना चाहिए कि औरंगजेब की अनुदार धार्मिक नीति से पहले सिख मत भी हिन्दू-मुसलमानों के भेद को मिटाने का ही एक यत्न था।

ईसाइयत का प्रचार अकबर की नीति से शुरू हुआ। परिणाम भी वैसा ही हुआ। विश्वासी भारतवासियों के हृदय ने बिना किसी आशंका के ईसाइयत के प्रभावों का स्वागत किया। बड़ी प्रतिष्ठा और योग्यता रखनेवाले अनेक भारतवासी, जो शायद तलवारी धर्म का सामना करने में तलवार के घाट उतरने को सहर्ष उद्यत होते, इस शान्त धावे के शिकार हुए। ईसाई काल के कुछ ही समय पीछे कबीर जैसी सोच रखने वाले राममोहन राय आदि भी जन्म लेने लगे। धर्म के विश्वरूप से ईसाइयत और हिन्दूपन के भेद को खपा देने का उद्योग बंगाल में ब्राह्मसमाज ने उठाया। यदि ब्राह्मसमाज के इतिहास को विस्तार से पढ़ें तो हमें प्रतीत होगा कि उसके नेताओं का उद्योग ईसाइयत और हिन्दू धर्म की मध्यमावस्था निकालकर दोनों को साथ-साथ दीर्घजीवी बनाने के लिए था-हिन्दूपन को ईसाइयत की कलम लगाकर उस रगड़ को दूर करने के लिए था, जिसका शीघ्र या देर में उत्पन्न होना अवश्यम्भावी था।

शान्त परन्तु गहरे और पेचदार उपायों से ईसाइयत भारत के धार्मिक दुर्ग में प्रवेश कर रही थी। वह दुर्ग बड़ी शोचनीय दशा में था। रीति और बन्धन की जो बाड़ें इस्लाम के धावे को रोकने के लिए बनाई गई थीं, वे अपनी ही वृद्धि को रोक रही थीं। चारदीवारी से घिर जाने के कारण दुर्ग के निवासियों में फूट पड़ी हुई थी। यदि संक्षेप में दुर्ग की दशा को कहना हो तो हम कहेंगे कि भारत के निजधर्म-हिन्दू धर्म-को रूढ़ि और तुच्छ भेदों के रोग लगे हुए थे। एक ओर बन्धन और रीति-रिवाज का जोर, दूसरी ओर तुच्छ भेदों के कारण एकता का नाश-ये दो रोग थे, जिनसे भारत का धर्मरूपी शरीर पीड़ित हो गया था। ईसाइयत के कीटाणु हवा और पानी के साथ चुपचाप उस शरीर में प्रवेश कर रहे थे। ब्राह्मसमाज ने इस दशा का अनुभव तो किया, परन्तु उसे रोकने का जो यत्न किया। वह यह था कि ईसाइयत के कीटाणुओं से युक्त जल को कुछ स्वादुरूप दे दिया। इस उपचार से रोग दूर होगा या नहीं कीटाणुओं से युक्त जल शरीर में प्रविष्ट होने से रुकेगा या नहीं इन प्रश्नों का उत्तर हम नहीं देंगे, क्योंकि इतिहास दे चुका है।

यही दशा थी जब महर्षि दयानन्द ने गुरु विरजानन्द से विदायगी ली। उन्होंने

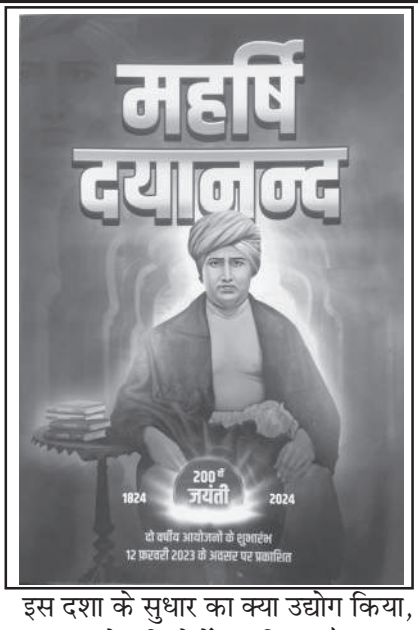

इस दशा के सुधार का क्या उद्योग किया, यह अगले परिच्छेदों का विषय है।

– *क्रमशः*

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200वीं जयन्ती पर पुनःप्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

बाल बोध

मन की एकाग्रता से मिलेगी सफलता

"लोग कहते हैं कि पढ़ने के लिए जा रहे हो तो अपना पूरा मन लगाकर पढ़ना, काम करने के लिए जा रहे हो तो पूरा मन लगाकर के काम करना। हर कोई यही कहता है कि मन लगाकर के हर काम करिए। मन लगाकर के खेलना, मन लगाकर पढ़ना, आधा-अधूरा होकर नहीं रहना। क्योंकि मन जितना भी किसी चीज में रम जाएगा उतना ही चमत्कारी कार्य करेगा। आधे-अधूरे मन से कोई कुछ भी नहीं कर सकता। जिस आदमी को अपने मन को कहीं लगाना आ जाए तो उसके भीतर रस आना शुरू हो जाता है। जैसे साहित्य, संगीत, कला, विज्ञान, जिस भी विषय पर मन टिक गया, जिसमें मन पूरी तरह से लग गया तो मन लगने का मतलब है कि मन को उसमें रस आना शुरू हो जाता है और वही एकाग्रता उसकी सफलता का आधार बन जाता है।"

मनुष्य असीम शक्तियों का स्वामी है, इसके शरीर की शक्ति, मन की शक्ति, बुद्धि की शक्ति और सबसे बड़ा होता है-आत्म बल। अगर किसी का आत्मा बलवान है तो एक कमजोर, पतले-से शरीर का दिखने वाला व्यक्ति भी वह चमत्कार कर सकता है, जो मोटा-तंदरूस्त दिखाई देने वाला आदमी भी नहीं कर सकता। क्योंकि शरीर की शक्ति, मन की शक्ति, बुद्धि का बल, और अन्य जितनी भी शक्तियां मनुष्य के भीतर होती हैं, उन सब शक्तियों का केंद्र एक ही होता है, उसका नाम आत्मा है और जो संपूर्ण संसार को गति देने वाला है, उस परम सत्ता का नाम परमात्मा है। वैसे दोनों सत्ताएं मनुष्य के शरीर में ही विराजमान हैं। इसलिए मनुष्य जितना-जितना अपनी शक्तियों को जगाता है, प्रयोग करता है, ये उतना-उतना बढ़ती जाती हैं। जैसे मीठे पानी का कुआं होता है, कुएं से जितना-जितना पानी आप निकालेंगे, उसमें उतना-उतना ही बढ़ता जाएगा। क्योंकि जल अपने अक्षय स्रोत से जुड़ा हुआ है। मनुष्य को भी अपने आपसे जुड़ने के लिए अपने श्वासों पर ध्यान टिकाते-टिकाते अपने मन को एकाग्र करना चाहिए और मन की एकाग्रता ही मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति है। मनुष्य को अगर संसार में सफलता पानी हो या ईश्वर की उपासना में आगे बढ़ना हो मन की एकाग्रता दोनों ही स्थितियों में आवश्यक है।

मनुष्य ज्यादातर आधे-अधूरे मन से कार्य करके पूरी सफलता पाने की कोशिश करता है। लेकिन अधूरे मन से किए गए कार्य में सफलता भी अधूरी ही मिलती है। जब पूरी तरह से मन किसी एक स्थान पर या कार्य पर एकाग्र हो जाए तो फिर यही मन कमाल करके दिखाता है। लोग कहते हैं कि पढ़ने के लिए जा रहे हो तो अपना पूरा मन लगाकर पढ़ना, काम करने के लिए जा रहे हो तो पूरा मन लगाकर के काम करना। हर कोई यही कहता है कि मन लगाकर के हर काम करिए। मन लगाकर के खेलना, मन लगाकर पढ़ना, आधा-अधूरा होकर नहीं रहना। क्योंकि मन जितना भी किसी चीज में रम जाएगा उतना ही चमत्कारी कार्य करेगा। आधे-अधूरे मन से कोई कुछ भी नहीं कर सकता। जिस आदमी को अपने मन को कहीं लगाना आ जाए तो उसके भीतर रस आना शुरू हो जाता है। जैसे साहित्य, संगीत, कला, विज्ञान, जिस भी विषय पर मन टिक गया, जिसमें मन पूरी तरह से लग गया तो मन लगने का मतलब है कि मन को उसमें रस आना शुरू हो जाता है और वही एकाग्रता उसकी सफलता का आधार बन जाता है।

जैसे कुछ लोग तार या रस्सी पर चलते हैं, कुछ लोग तो अपने मन तथा प्राण शक्ति को एक जगह ठहराकर मोटे-मजबूत सरिए को गले से मोड़ देते हैं, कांच को हाथों से पीसते हैं यह मन एवं प्राणों की एकाग्रता की शक्ति है। एकाग्र मन की शक्ति इतनी अद्भुत होती है कि पहले हमारे साथ गुरूकुल में एक विद्यार्थी था जो तीर चलाकर मोमबत्ती को बुझाता था। वह ऐसा भी अभ्यास दिखाता था कि आप डंडे पर डंडे को मारिए और वह आंखों पर पट्टी बांधकर पीछे की तरफ से तीर चलाता था, तो जहां से आवाज आती थी वहां जाकर उसका तीर लगता था। तो ये है मन की एकाग्रता की शक्ति। ज्ञाब्द पर ध्यान टिकाया और मन को एकाग्र करके ध्वनि को पहचान कर ऐसा शब्द भेदी बाण चलाना और शीशे में देखकर उल्टी तरफ रखी हुई मोमबत्ती को बुझाना, ये एकाग्रता की शक्ति है। कोई अगर ऐसी एकाग्रता चाहते हैं, तो यह अद्भुत शक्ति उसके अंदर आ सकती है। व्यक्ति अगर अपनी शक्तियों को जागृत करे, सही दिशा में मन को एकाग्र करना सीख जाए तो वह सब कुछ कर सकता है। अभ्यास के द्वारा आप वहां तक जा सकते हैं, जहां तक आपकी कल्पनाएं भी नहीं जाती हैं।

मन की दो स्थितियां विशेष हैं, व्यग्रता या एकाग्रता। व्यग्रता अर्थात् व्याकुलता छटपटाहट ये मन में आ जाएं तो व्यक्ति सोचता है कि वह कर लूं, इधर चला जाऊं, उधर चला जाऊं, इसको इधर कर दूं, उसको उधर कर दूं, उसको यह कह दूं, इसको यह कह दूं, इस उथल-पुथल में ही मन विचलित रहता है। ये मन की व्यग्रता है, अशांत मन की बिखरी हुई स्थिति है।

मन की दूसरी दशा एकाग्रता की है, जिसमें उसे अपना लक्ष्य याद है। मन को एकाग्र रखने के लिए अपने व्यवहार में शांति और मन में उल्लास रखिए। जीवन की राह में, रिश्ते-नातों में, कार्यालय में या व्यापार के स्थान पर जो भी मिले सबसे हंसते-मुस्कराते हुए प्रेमपूर्वक व्यवहार करते जाएं। तो पहला कार्य हमें करना होगा वह शिथिलकरण, तनाव से रहित, दबाव से रहित होकर अपने आपको शांत करना है, इस शांति में थोड़ी-सी मुस्कराहट मिलानी है, इस शांति में थोड़ा-सा प्रसन्नता का भाव सम्मिलित करना है, इस शांति में थोड़ा-सा उल्लास होना चाहिए। बिलकुल इस तरह से सोचिए जैसे मेरे पास कोई अभाव नहीं है। कोई रिक्तता नहीं है, केवल शांति है और शांति है। इस तरह की विचारधारा बनाकर मन को संतुलित करना है और फिर एकाग्रता को धारण करके अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित होना है।

– शेष अगले अंक में

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनन्य शिष्य, राष्ट्रभक्त, स्वतन्त्रता सेनानी, अमर हुतात्मा, शिक्षाविद, गुरुकुलों के पुनरुद्धारक

प्रेरणाओं के प्रकाश पुंज – स्वामी श्रद्धानन्द जी

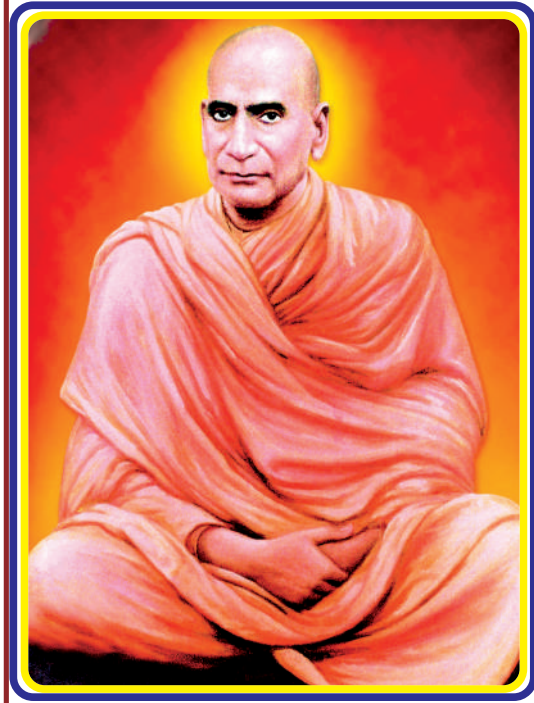

97वें बलिदान दिवस पर शत-शत नमन

स्वामी श्रद्धानन्द एक ऐसा महान व्यक्तित्व और प्रेरणाप्रद कृतित्व संसार में हुआ जिनका हम कितना ही गुणगान करें किंतु कम ही प्रतीत होगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनन्य शिष्यों में अत्यंत प्रमुख स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना तन, मन, धन और सर्वस्व मानवता की रक्षा के लिए समर्पित करके यह सिद्ध कर दिया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी प्रेरणा से उनके आदर्शों पर चलकर व्यक्ति कहां से कहां तक पहुंच सकता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी आप जिए भी वैदिक धर्म, शिक्षा, संस्कृति और संस्कारों के उत्थान के लिए, मानव जाति के कल्याण के लिए, दलितों के उद्धार के लिए, अपनों को गले लगाने के लिए, मानव मात्रा को सुदिशा देने के लिए और आपका प्रेरक बलिदान भी स्व संकल्प की पूर्ति में संलग्न कर्तव्य परायणता के महायज्ञ में आहुति देते हुए ही हुआ। आपको कहां पता था कि घातक कुटिल है, छल-कपट से भरा हुआ है, आप तो एक महान परोपकारी आत्मा थे, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के पक्के और सच्चे अनयाई थे, आज जब संपूर्ण आर्य जगत और विश्व समुदाय महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती और आर्य समाज की स्थापना की 150वीं वर्षगांठ के अवसर पर दो वर्षीय विश्वव्यापी आयोजन लगातार भव्यता और सपफलता के साथ कर रहा है तो उसके बीच आपका 97वां बलिदान दिवस हम सब आर्यजनों के लिए प्रेरणाओं का प्रकाश पर्व है, मानव सेवा और परोकार का संकल्प दिवस है, महर्षि दयानन्द के अधूरे कार्यों को पूर्ण करने के लिए व्रत धरण करने की अमृत बेला है। अतः समस्त आर्य समाज की ओर से आपको शत-शत नमन करते हैं और हम सब आपके पद चिन्हों पर चलते रहें, देश, धर्म और सेवा तथा परोपकार के कार्यों को आगे बढाते रहें, ईश्वर से यही प्रार्थना करते हैं। – सम्पादक

भारत ऋषि मुनियों की भूमि है। यहां समय समय पर मानव समाज को सुदिशा प्रदान करने के लिए ऋषि-मुनि, योगी, ज्ञानी, सिद्ध-साधक, संन्यासियों ने जन्म लेकर प्रेरणाप्रद लोकोपकारी सेवा कार्य किए हैं। महापुरुषों के जन्म और जीवन की यह श्रृंखला इतनी विशाल है कि जिसको शायद ही कोई एक व्यक्ति पूरी तरह से आत्मसात कर पाया हो। किंतु महानता के इस विराट क्रम में 2 फरवरी 1856 को जालंधर-पंजाब के तलवान ग्राम में श्री नानक चंद विज के घर एक ऐसे महापुरुष का जन्म हुआ जिन्हें हम स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती के नाम से जानते हैं।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि देव दयानंद के अतिशय और अनन्य भक्त स्वामी श्रद्धानंद का जन्म और जीवन उस रंग-बिरंगे सुगंधित फूल की तरह है जो परोपकार के लिए ही धरा पर जन्म लेता है और परोपकार के लिए ही अपना सर्वस्व न्यौछावर करता है। वह जहां भी जाता है, वहां की शोभा बनता है और जो भी करता है परोपकार के लिए ही करता है। फूल तो हर हाल में, हर काल में और हर स्थिति में हंसते मुस्कराते हुए, परोपकार करते हुए अपनी विदाई से पहले दूसरे अनेक फूलों जन्म देकर ही जाता है। संसार में कोई धन से, कोई मन से और कोई तन से सेवा करता है। किंतु स्वामी श्रद्धानंद एक ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने तन, मन, धन और अपना पूरा जीवन यहां तक की अपने प्राणों से प्यारी संतानों को भी आर्य समाज के प्रचार-प्रसार और विस्तार को समर्पित कर दिया था।

सेवा के सोपान

स्वामी श्रद्धानंद जी के द्वारा किए गए जो लोकोपकारी सेवा के कार्य है उनमें चाहे ज्ञुद्धि आंदोलन का महान कार्य हो अथवा पिछड़ों को गले लगाकर उन्हें विधर्मी बनने से रोकने का उदाहरण हो, वैदिक धर्म और संस्कृति की रक्षा हेतु गुरुकुलों की स्थापना का ऐतिहासिक कार्य हो या देश की स्वाधीनता के आंदोलन में सक्रिय भूमिका का निर्वहन हो अथवा 30 मार्च 1919 को दिल्ली के दिन चांदनी चौक में घंटा घर पर फिरंगियों के सामने अपनी छाती को तानकर निर्भीक स्वर में यह कहना **"चलाओ गोली"** भारत की जनता पर गोली चलाने से पूर्व तुम्हें इस संन्यासी की छाती को छलनी करना होगा। स्वामी जी की इस उद्घोषणा, हुंकार को सुनकर अंग्रेजी पुलिस उनके सामने नतमस्तक हो गई थी और देश के भोली-भाली जनता के लिए यह असीम प्यार और समर्पण का भावपूर्ण समाचार पूरे देश में आग की तरह फैल गया था। ऐसे महान वीर आर्य संन्यासी का बलिदान दिवस हमें जगाने का ही प्रेरणा पर्व है।

आर्य समाज की प्रेरणा स्रोत– स्वामी श्रद्धानन्द

राष्ट्र एवं मानव सेवा को समर्पित आर्य समाज के सशक्त प्रेरणा स्तम्भ अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का 93वां बलिदान दिवस गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 23 दिसंबर 2019, जिसे आर्य समाज 25 दिसंबर को श्रद्धाभाव से मनाता आया है, वह पूरी शक्ति से मनाया जाएगा। यज्ञ होगा, विशाल शोभा यात्रा निकलेगी, विशेष सभा का आयोजन होगा, इत्यादि-इत्यादि। लेकिन इस अवसर पर हमें यह अवश्य समझना चाहिए कि स्वामी श्रद्धानंद जी ने आर्य समाज का जितना प्रचार-प्रसार और विस्तार किया, मानव सेवा के कीर्तिमान स्थापित किए हैं, कहीं न कहीं वे हम सबको प्रेरित कर रहे है कि हम भी अपने जीवन में उनसे प्रेरणा लेकर आर्य समाज के लिए कुछ न कुछ ऐसा अवश्य करें जिससे हमारा जन्म और जीवन सफल हो सके।

श्रद्धा का सत्य स्वरूप

त्यागी-तपस्वी और महान बलिदानी स्वामी श्रद्धानंद जी का संपूर्ण जीवन दर्शन मानव मात्र के लिए स्तुत्य प्रेरणा का स्रोत है। व्यावहारिक जीवन में अगर किसी की उंगली में भूल से भी सुई की नोक चुभ जाए तो व्यक्ति पीड़ा से कराह उठता है, लेकिन सरहद पर देश की रक्षा के लिए तैनात जवान अपने सीने पर गोली खाकर भी दुश्मन के ऊपर उल्टा प्रहार करता है, हंसते-हंसते शहीद होते हुए "जय हिंद" का नारा उसके मुंह से निकलता है इसी का नाम है सच्ची श्रद्धा, किंतु आजकल अगर कोई स्वामी श्रद्धानंद जी के बलिदान दिवस पर आयोजित होने वाली शोभायात्रा के अवसर पर किसी के बच्चे को भाग लेने के लिए प्रेरित करे तो अक्सर घर वाले कहते हैं कि बहुत ठंड है, बच्चा बीमार हो जाएगा, किंतु अपने पुत्रों से गुरुकुल की शुरूवात करने वाले स्वामी श्रद्धानंद ने यह कभी नहीं सोचा कि गंगा के किनारे खुले में, झोपड़ी में रहकर मेरे बच्चे बीमार पड़ जाएंगे, बल्कि उन्होंने अपनी संतान सहित सारी संपदा को आर्य समाज के उत्थान में आहूत कर यह सिद्ध कर दिया कि श्रद्धा का अर्थ है-सत्य को धारण करना और जो श्रद्धा को सही रूप में अपनाता है, वही श्रद्धानंद युग-युगांतरों तक प्रेरणा बनकर सबके दिलों में रहता है। आज आवश्यकता है कि हम स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन से जुड़े प्रेरक सस्मरणों से युवा पीढ़ी को अवगत कराएं और उन्हें बताएं कि स्वामी जी कितने महान थे, उन्होंने किस तरह कठिन से कठिन परिस्थितियों में आर्य समाज को विश्वभर में फैलाने के लिए कार्य किया।

संकल्प के धनी

निर्बल व्यक्ति हमेशा विकल्प खोजता है। जबकि वीर पुरुष अपने मन में संकल्प धारण कर उन्हें जी-जान से पूरा करते है। इसलिए कहा जाता है कि संकल्प करना आसान है और उसे पूरा करना कठिन कार्य है। स्वामी श्रद्धानंद जी हमेशा कठिन रास्तों का चयन करते है। क्योंकि उन्हें पता था कि जो लोग सरल रास्तों का चयन करता है उनका जीवन कठिन हो जाता है और जो कठिन राह पर चलते है उनका जीवन ही सफल हुआ करता है। स्वामी जी जालंधर से लाहौर गए थे। और वहीं पर उन्होंने संकल्प धारण कर लिया कि जब तक गुरुकुल की स्थापना के लिए मैं धनराशि एकत्रित कर लूंगा तब तक अपने घर प्रवेश नहीं करूगा और जैसे ही वे लाहौर से लौटकर जालंधर आए तो सीधे आर्य समाज में चले गए और उन्होंने घर में प्रवेश नहीं किया। इस घटना का समाचार जब पहुंचा तो विचार कीजिए कितनी वेदना हुई होगी? छोटे-छोटे बच्चे जिनकी मां का भी साथ छूट गया था और अपने पूरे घर का मुखिया इस तरह से अचानक घर में आना ही बंद कर दे तो सोचो उन पर क्या गुजरी होगी। उनके दोनों पुत्र इंद्र जी और हरीशचंद्र जी अपनी ताई जी के साथ जब अपने पिता के पास पहुंचे तो उन्होंने केवल यही कहा कि जब तक गुरुकुल के लिए दानराशि एकत्रित करने का मेरा संकल्प पूर्ण नहीं होगा तब तक घर में प्रवेश नहीं करूगा। संकल्प पूर्ण होने के बाद ही घर आऊंगा। महान संकल्प के धनी स्वामी श्रद्धानंद जी ने एक असंभव से दिखने वाले संकल्प को दृढ़ता से पूर्ण किया और गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करके वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का उपवन पल्लिवित और पुष्पित कर दिया। जहां से पूरे विश्व में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार की वेद ज्ञानमयी किरणें प्रकाशित होने लगी।

ईश्वर पर अटूट विश्वास

अथक परिश्रम और पुरुषार्थ करने वाले, संपूर्ण धरा पर प्रेम सुधा बरसाने वाले, केवल अपने लिए और अपनों के लिए नहीं, अपितु मानव मात्र के लिए मर-मिटने वाले स्वामी श्रद्धानंदजी का ईश्वर के प्रति इतना अटल और अटूट

– शेष पृष्ठ 7 पर

दिल्ली में आयोजित दो दिवसीय विशेष बैठक : 16-17 दिसम्बर, 2023 - चित्रमय झांकी

धन्य है टंकारा की वह पावन धरा जहाँ महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जन्म लिया, धन्य हैं महर्षि के पूज्य माता-पिता जिन्होंने महर्षि को जन्म दिया, धन्य थे वे सभी लोग जिन्होंने महर्षि को बचपन और किशोरावस्था में देखा, धन्य थे गुरु विरजानंद दंडी जिन्होंने महर्षि दयानन्द को शिक्षा प्रदान करने का

मिसकॉल सेवा 9868474747

प्रचार हेतु सभा का क्रान्तिकारी उपक्रम : भरपूर करें प्रयोग

पृष्ठ 5 का शेष

गौरव प्राप्त किया, धन्य थे हमारे वे सभी अग्रज महापुरुष जिन्होंने महर्षि के साक्षात दर्शन किए और उनसे मानव कल्याण की प्रेरक शिक्षाएं प्राप्त की, धन्य थे हमारें लाखों क्रांतिकारी, देश पर बलिदान होने वाले अमर वीर बलिदानी जिन्होंने महर्षि की प्रेरणा से देश को आज़ादी दिलाने हेतु अपना सर्वस्व न्यौछावर कर गए, धन्य थे आर्य समाज के वे हमारे विद्वान, आर्य संन्यासी और आर्यनेता नेता और अधिकारी जिन्होंने महर्षि की 100वीं,150वीं जयंती मनाई और धन्य हैं हम सब जो महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयंती के साक्षी बन रहे हैं, कुछ इसी तरह के उमंग, उत्साह और उल्लास भरे मनोभाव से आर्यजगत सराबोर है।

यह सर्वविदित ही है कि 12 फ़रवरी 2023 देश को इंद्रा गाँधी स्टेडियम नई दिल्ली में महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस को लेकर दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला का भव्य उद्घाटन देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्वयं अपने कर कमलों से किया था। तब से लेकर अब तक लगातार देश के कोने-कोने में और विदेशों में आर्य समाज द्वारा एक से बढ़कर एक प्रेरक ऐतिहासिक आयोजन अपनी अपार सफलताओं को साथ संपन्न हो रहे हैं। आर्य समाज द्वारा एक नया इतिहास निर्मित हो रहा है, मानव कल्याण की एक नई क्रांति और नई प्रेरणा का उदय हो रहा है। इसी क्रम में 10-12 फ़रवरी 2024 के बीच महर्षि की पावन जन्मभूमि टंकारा गुजरात की पुण्यभूमि 200वीं जयन्ती का भव्य आयोजन सुनिश्चित है। जिसको लेकर पूरे भारत और विश्व में अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास का वातावरण है और क्यों न हो यह उत्साह का वातावरण? महर्षि दयानन्द सबसे प्यारे और सबसे न्यारे एक ऐसे अद्भुत और अनुपम व्यक्तित्व के स्वामी थे जिन्होंने 19वीं सदी में अपने तप, त्याग और साधना से आधुनिक भारत के निर्माण में जो अहम भूमिका निभा वह अपने आप में युगा-युगांतरों तक अविस्मरणीय रहेगी।

महर्षि की 200वीं जयन्ती पर टंकारा में आयोजित होने वाले ज्ञान ज्योति महोत्सव, स्मरणोत्सव के विशाल-विराट और भव्य आयोजन को लेकर 16-17 दिसंबर 2023 को दो दिवसीय विशाल बैठक का आयोजन के नई दिल्ली में किया गया। जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचंद्र आर्य, डीएवी कॉलेज प्रबन्धकृर्त्री कमेटी के प्रधान पद्मश्री पूनम सूरी जी, ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, आर्य वीर दल के संरक्षक डॉ. स्वामी देवव्रत जी, टंकारा टस्ट के कार्यकारी प्रधान श्री योगेश मुंजाल जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, भारत की प्रांतीय सभाओं के अधिकारी जिनमें दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, मध्य भारत, मुम्बई , राजस्थान, विदर्भ, छत्तीसगढ, झारखंड, महाराष्ट्र, कर्नाटक, बंगाल, बिहार, असम, उत्तराखंड, हिमाचल, प्रादेशिक सभा, उत्तर प्रदेश और जम्मू कश्मीर, गुजरात, ओडिशा, परोपकारिणी सभा, उदयपुर, अजमेर, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, टंकारा टस्ट, और अनेक अन्य संस्थाओं के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य उपस्थित रहे।

16 दिसंबर 2023 को बैठक का प्रथम सत्र आर्य समाज हनुमान रोड के सभागार में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचंद्र आर्य जी की अध्यक्षता में गायत्री मंत्र और स्तुति प्रार्थना मंत्रों के उच्चारण से प्रारंभ हुआ। जिसमें उपरोक्त सभी अधिकारी उपस्थित रहे।

स्वागत उद्बोधन श्री ओम प्रकाश आर्य जी, उपप्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने दिया, मध्य भारत सभा के प्रधान श्री प्रकाश आर्य जी ने पूरे कार्यक्रम की भूमिका प्रस्तुत की और किस तरह से पूरे देश में छोटे-बड़े आयोजन लगातार चल रहे हैं, चारों तरफ उमंग, उत्साह और उल्लास का वातावरण है, इससे सबको अवगत कराया।

श्री सुरेश चंद्र आर्य जी ने 12 फ़रवरी 2023 को प्रधानमंत्री द्वारा उदघाटन कार्यक्रम के बाद से लगातार देश में ही नहीं विदेशों में जो उत्साह का जो वातावरण बना है उसको अपने आप में एक विशेष अभियान बताया और सभी को प्रेरित करते हुए अपने संदेश में 2024 के टंकारा में आयोजन को सफल बनाने का आहवान किया।

दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने सभी महानुभावों का परिचय कराया और ज्ञान ज्योति महोत्सव की दो वर्षीय कार्य योजना की तैयार की गई पुस्तिका का विस्तृत परिचय दिया।

ज्ञान ज्योति महोत्सव की कार्ययोजना की पुस्तक का विमोचन आयोजन समिति के अध्यक्ष जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन और अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के प्रधान तथा आयेजन समिति के अध्यक्ष श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने किया। इस अवसर पर 2 करोड़ लोगों तक पहुँचने के जनसंपर्क अभियान चलाने का संकल्प लिया गया और इसके साथ ही ज्यादा से ज्यादा होर्डिंग्स, बैनर और पोस्टर लगाकर प्रचार-प्रसार के लिए भूमिका बनायी गई। इस अवसर पर श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, प्रादेशिक सभा के मंत्री श्री एस के शर्मा जी, सुरेश चन्द्र आर्य जी, श्री प्रकाश आर्य जी, विनय आर्य जी, और उपस्थित सभी सभाओं के अधिकारियों ने अपने विचार और सुझाव रखे।

17 दिसंबर 2023 को श्री बृजमोहन मुंजाल आडिटोरियम, आर्य समाज ग्रेटर कैलाश, पार्ट-1 में विशेष सत्र में पद्मश्री पूनम सूरी जी, अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी और उपरोक्त वर्णित सभी अधिकारी आर्यनेता उपस्थित थे। बहुत ही सुंदर निष्ठा भाव से भव्य और विशाल आयोजन को सफल बनाने में सभी ने अपने अपने विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर पद्मश्री पूनम सूरी जी, सुरेंद्र कुमार आर्य जी, श्री सुरेश चंद्र आर्य जी, स्वामी देवव्रत जी, श्री योगेश मुंजाल जी, विनय आर्य जी इत्यादि महानुभावों ने विशेष उद्बोधन और योजनाओं को प्रस्तुत किया, जिसे सभी प्रांतीय सभाओं के अधिकारियों ने सहमति प्रदान की। महर्षि दयानन्द की ग्रंथों पर सामूहिक पुस्तक और 5 अन्य पुस्तकों का विमोचन किया गया, महर्षि दयानन्द के स्मृति चिन्ह के आधार पर बने चाँदी के सिक्के और अन्य प्रचार प्रसार की सामग्री का विमाचन महानुभावों द्वारा किया गया। बहुत ही प्रेम सौहार्द के वातावरण में 10 से 12 फरवरी 2024 तक आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम को लेकर सफल सुंदर योजनाओं का निर्धारण किया गया।

पृष्ठ 2 का शेष

परिवार छोटे हुए या कार्पोरेट ने किया लोगों ....

एक ऊँचा वर्ग जिनके पास पैसा था, जो दो या तीन बच्चो का पोषण कर सकते थे वो अपने बच्चो को भाई-बहन देने के बजाय टेडी बियर और बार्बी डॉल जैसे खिलोने देने लगे।

धीरे-धीरे जब भारत जैसे देशों में भी परिवार सिकुड़ने लगे तो कामकाजी लोग अपने बच्चो के लिए गुडिया और टेडी बियर खरीदने लगे। अब दूसरे चरण में बाजार इस एकल व्यवस्था पर हावी होने लग गया था, पहले खिलोने फिर इलेक्ट्रॉनिक गेम्स बाजार में आने लगे, आज ऑनलाइन गेम्स का सालाना बिजनेस सिर्फ इंडिया में ही एक लाख करोड़ का है और गुड्डे-गुडिया, खेल-खिलोने का बाजार 2022 में डेढ़ बिलियन डॉलर था।

इसी तरह आज भारत में ऑनलाइन फूड डिलिवरी बाजार 33 अरब अमेरिकी डॉलर है जो 2027 तक अनुमानित 73 अरब अमेरिकी डॉलर हो जाएगा। इसका अनुमान इसी से लगा लीजिये कि अगले पांच से दस साल में आधी आबादी घर में खाना बनाना बंद कर देगी और ऑनलाइन भोजन पर निर्भर हो जाएगी।

आज से तीस साल पहले लोग उसी घर में रहते थे जो बाप-दादा का बनाया हुआ था, उसमें पूरा परिवार एक साथ रहता था, धीरे-धीरे परिवार पीछे छूटने लगे भूमंडलीकरण की वजह से उन देशों में भी परिवार टूट रहे हैं, जहां अकेले रहने की परम्परा नहीं है। भारत की ही बात करें तो बड़ी संख्या में लोग रोज़गार की तलाश में गांवों से शहरों या विदेशों में पलायन कर रहे हैं, बड़ी संख्या में फ्लेट बनने लगे हैं जो खरीद सकता है खरीद ले, जो नहीं खरीद सकता वो बैंक से लोन लेकर किस्तों में भी ले सकता है। आज रियल बिजनेस 477 बिलियन डॉलर्स तक पहुँच चुका है। इसके विपरीत साल 2015 की दैनिक जागरण की एक रिपोर्ट थी कि उत्तराखंड में बड़ी संख्या में करीब तीन हजार गाँव खाली हो चुके हैं।

अब आगे बढ़िए, बड़े परिवार थे तो मकान भी बड़े थे, इस कारण घरों में हमेशा चहल-पहल और रौनक बनी रहती थी। बच्चे छुट्टियों में मामा-नाना-नानी या बुआ और मौसी के घर जाते थे, रिश्ते भी मजबूत होते थे और बच्चो को बच्चे मिल जाते थे, लेकिन अब ये चीजें बड़ी तेजी से पीछे छूट रही हैं, जिसकी वजह से ना चाहते हुए भी परिवारों में एक दूरी बन रही है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी यही स्थिति आज शोध का विषय बन गई है। ब्रिटेन की एक संस्था है "स्टैंड अलोन" जो परिवार से अलग हो चुके लोगों की मदद करती है, इस संस्था की शोध रिपोर्ट बताती है कि ब्रिटेन में हर पांचवें परिवार में कोई एक सदस्य परिवार से अलग होता है। अमरीका में क़रीब दो हज़ार मांओं और उनके बच्चों पर की गई रिसर्च बताती है कि 10% माएं अपने बच्चों से अलग हो चुकी हैं, अमरीका का ही एक और शोध बताता है कि कुछ समुदायों में मां-बाप का बच्चों से अलग होना इतना ही आम है जितना कि तलाक़ होना। इसके अलावा कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और सिंगापुर में भी यही हाल है। लगभग सभी देशों में आज बुज़ुर्गों के लिए ओल्ड-एज हाउस बनने लगे हैं, उन्हें वहां कीमत देकर हर तरह की सहूलतें मिल जाती हैं। यानि अब ओल्ड एज हाउस भी एक बड़ा बिजनेस बन चुका है। कुछ शोधकर्ताओं का मानना है कि आने वाले 20 साल में स्थिति पूरी तरह बदल जाएगी, तब हर कोई अकेला रह रहा होगा और सिर्फ सेवा प्रदाता कम्पनियों के भरोसे जीवन जी रहा होगा। लेकिन इस अकेलेपन से वो अपनी आयु को भी कम कर रहा होगा। दरअसल इसी अगस्त में लाइव टू हंड्रेड सेक्रेट्स ऑफ़ दि ब्लू जोंस नाम की एक डॉक्यूमेनट्री आई थी, जिसमें लम्बा जीवन जीने के रहस्य बताये गये हैं। डैन ब्यूटनर ने 20 साल तक जो अध्ययन किया वह इस डॉक्यूमेंट्री के माध्यम से बताया है कि छोटे परिवार या अकेले रहने वालों की अपेक्षा बड़े और संयुक्त परिवारों में रहने वाले लोग ही लम्बा जीवन जीते हैं।

कारण आज बच्चे छोटे एकल परिवारों में रह रहे हैं, जहां पिता के साथ-साथ मां भी दिनभर बाहर काम करती है, खाली घरों में बच्चों की देखभाल आया करती है। अगर बच्चा अकेला है तो अवसाद में भी चला जाता है, पहले घरों पर बहुत से रिश्तेदारों का आना-जाना लगा रहता था। सुख सुविधा के अभाव में लोग अनजाने में ही सही, मेहनती और जिम्मेदार बनते चले जाते थे। अब बच्चों को न तो मेहमान दिखते हैं और न ही अभाव। उनके लिए हर चीज एक ऑर्डर पर हाजिर होती है, तो उनके अन्दर जिम्मेदारी का आभाव कम होता चला जा रहा है। आज अकेलेपन में छोटी-सी डांट भी बच्चों को चुभने लगती है, कई मौकों पर वो आत्महत्या तक कर रहे हैं, क्योंकि

- *जारी पृष्ठ 7 पर*

Continue From Last Issue

Roar of Lion on Bank of Ganga

(From 1867-1869 A.D)

Pandit Ambadatt Vaidya and Pandit Hira Vallabh Parvati of Anup city got ready for debate over Idol worship.

Pandit Ambadat could not face Swamiji and asked some other Pandit to take part in debate. Pandit Parvati was defeated. So, asper his earlier decision about defeat, he threw away idol of Shaligram into Ganga. The result was that other people also started throwing the idols into Ganga. They came to Swamiji for getting prasad of Gayatri and Yagyopaveet. Non stop yagya was started on bank of Ganga. People got their right to worship after centuaries and chanted slogans in favour of Rishi "Rishi Dayanand ki Jai".

After travelling for some days Swamiji reached back Karnavas on 20 May, 1868 and stayed in his cottage. He was quite fearless. If he had not been fearless, he could not have stopped in the work of Reform. Work of reform can be done by 'Lions' only and not by jackals. The person who is not afraid of criticism, attack by some mad person or some powerful weapon, he can not try to remove the bad customs prevailing for centuries. Only he can do such pious work who is not afraid of criticism or weapons. Swami Dayanand had decided taught Arya Society to get rid of bad customs. He was determined to bring such situation that people should get their rights from the Mahants and Purohits afer centuries. If Rishi had not been a 'LION', he could not have challenged the heads of prevailing different religions.

An incident shows his fearlessness in Karnavas. A very richman of Bareli Rao Karan Singh reached Karnavas for taking bath in Ganga (Ganga snan). He was the disciple of Vaishnacharya Rangacharya of Vrindavan. He used to have tilak on his forhead. He reached Swamiji's cottage after listening about praise for him. He was very angry by nature. He had heard that Swamiji condemned use of Tilak, so he was very angry about that. Swamiji offered him an asan (seat) near his asan. Karna Singh angrily said that he would sit on (Swamiji's) his asan. So, Swamiji offered a part of his asan for him. So, there was no clash. Krana Singh, who was determined to have some clash, was disappointed. Then he made a new plan. He asked Swamiji, 'Do you not recognise Ganga's sacredness?'

Swamiji replied, 'I recognise Gangaji as much as it is'

Karna singh said, 'How much?'

Swamiji said that for him and people like Gangaji is just a 'Kamandlu' (a pot of water).

Then Karan Singh recited some Shlokas in praise of Ganga.

Swamiji remarked 'All this is not reality, it is false rather. It is just a drinking water. You can't get Moksha (salvation). Moksha is dependant on our actions (Karma). Popes have misled you' Then looking at the Tilak on his forehead. 'Why have you accepted This Tilak, the sign of beggars?'

Karan Singh, 'you won't be able to talk to our Swamiji. You are equal to worm before him. People like you carry their shoes.'

Swamiji replied with a smile, 'call your Guruji for debate. If he is unable to come here, I can ready to go him.'

To be Continue.....

पृष्ठ 6 से आगे

परिवार में कोई न कोई बड़ा जरूर होता था, जैस चाचा-चाची, ताऊ-ताई, उनके बच्चे आदि, जिनके साथ वो अपने दिल की हर बात बेझिझक कह सकते थे, जो बात हम माता-पिता से भी कहने में डरते थे, लेकिन आज सूने से घर में ऐसा कोई नहीं है जिसके पास बच्चों को समझने या सुनने की फुर्सत हो, जिससे वो अकेलापन महसूस करता है, अगर रिश्तों के नाम पर उनके पास कोई है तो टेडी बियर और बार्बी डोल्स जो उन्हें ना सुन सकते हैं, ना समझ सकते हैं, ना समझा सकते हैं।

यानि कई दशकों पहले देखा गया कुछ उद्योगपतियों का सपना अब सच हो रहा है लोग आत्मनिर्भर बन रहे है लेकिन परिवार पीछे छूट रहे हैं। एकल होकर वो इन कॉर्पोरेट कम्पनियों के लिए कमा रहे है, चाहें खेलने के लिए गुड़िया हो या खाने के लिए ऑनलाइन आर्डर, घूमने के लिए नाना-नानी, बुआ-मौसी की जगह पर्यटन रिसोर्ट, हर एक जगह जहाँ वो खर्च कर रहे हैं सिर्फ कॉर्पोरेट के लिए।

हम जनसँख्या बढ़ाने की वकालत नहीं कर रहे, सिर्फ बता रहे हैं परिवार छोटे हुए तो फायदा किसका हुआ। संपत्ति किसकी बढ़ रही है? दो से अब लोग एक ही बच्चे पर आ गये, आगे चलकर क्या होगा? आप खुद अनुमान लगा सकते है। यानि समाज भी होगा लोग भी होंगे, लेकिन सब अकेले और वो अकेले लोग सिर्फ कॉर्पोरेट के लिए कमा रहे होंगे। सोचिये छोटे परिवार सुखी है या बड़े परिवार। - ***सम्पादक***

पृष्ठ 4 का शेष

विश्वास था कि जब वे अत्यंत बीमार थे और उपचार के बाद बीमारी से उबार कर स्वस्थ हो रहे थे तो उन्होंने यही कहा कि अब मेरा शरीर सेवा करने के योग्य नहीं रहा। अब तो ईश्वर से यही प्रार्थना है कि नया शरीर धारण करूं और फिर से मानवता की सेवा करूं। इससे पता चलता है कि उनका जीवन का केवल और केवल एक ही उद्देश्य था मानव सेवा, मानव सेवा, मानव सेवा। ऐसे महान वीर संन्यासी स्वामी श्रद्धानंद जी को 97 वर्ष पूर्व अब्दुल रशीद जैसे कायर ने गोली मारी और वे अमरत्व को प्राप्त हो गए। ऐसे महामना के बलिदान दिवस पर सभी आर्यजनों को यह प्रेरणा लेनी चाहिए कि हमारे जीवन का जो समय आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में व्यतीत होगा, मानव सेवा के कार्यो में जो समय हमारा व्यय होगा, वहीं हमारा अपना कल्याणकारी समय होगा। बाकी समय तो हमारा व्यर्थ में ही व्यतीत हो रहा है। - ***आचार्य अनिल शास्त्री***

शोक समाचार

श्री राकेश कुमार आर्य जी को मातृशोक

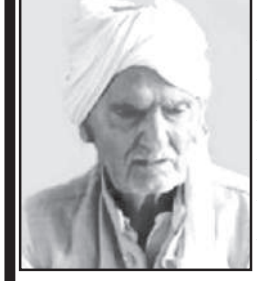

आर्यसमाज सागरपुर नई दिल्ली के मन्त्री श्री राकेश कुमार आर्य जी की पूज्य पिता श्री अभयराम नम्बरदार जी का दिनांक 16 दिसम्बर, 2023 को लगभग 85 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 24 दिसम्बर को कन्या पाठशाला, ग्राम बड़ोदा, मुजफ्फर नगर (उ. प्र.) में होगी।

श्री मुकेश शर्मा जी को मातृशोक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत संचालित विभिन्न प्रकल्पों में चालक के रूप में अपनी सेवाएं देने वाले श्री मुकेश शर्मा जी की पूज्य माताजी श्रीमती हरप्यारी देवी जी का दिनांक 12 दिसम्बर, 2023 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 23 दिसम्बर को विजय नगर, गाजियाबाद (उ.प्र.) स्थित उनके निवास पर आयोजित की जाएगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

आर्यवीर दल राजस्थान

का प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर

शीतकालीन आवासीय शाखानायक व आर्यवीर श्रेणी का योग-व्यायाम प्रशिक्षण, व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र निर्माण शिविर

24 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 2023

शिविर स्थल : **महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास**

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, ओल्ड केम्पस मोहनपुरा पुलिया के पास, जोधपुर

सम्पर्क सूत्र :

9929353838, 8005960428, 7073231760

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 18 दिसम्बर, 2023 से रविवार 24 दिसम्बर, 2023

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 20-21-22/12/2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 20 दिसम्बर, 2023

ओ३म्

महर्षि दयानन्द के
200वीं जयंती वर्ष में

MMTC द्वारा शुद्ध चांदी के विशेष सिक्के

999.9 टंच 10 ग्राम MMTC के प्रमाणपत्र सहित
आकर्षक पैकिंग में उपलब्ध

स्वयं रखने व
उपहार देने हेतु
सुंदर स्मृति चिन्ह

MRP ~~₹2000~~
विशेष मूल्य
₹1100

संपर्क सूत्र:
9540040339
9650183336

सीमित स्टॉक
जल्दी करें

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
वर्ष 2024 का कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339
ऑन लाइन खरीदें
www.vedicprakashan.com

JioTV Jio TV+
आर्य समाज का एक मात्र टीवी चैनल
आर्य सन्देश टीवी
Arya Sandesh TV
अब जियो टीवी नेटवर्क पर भी
Jio Set Top Box और JIO मोबाइल App पर उपलब्ध

भारत में फेले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ — सत्यार्थ प्रकाश — सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹60 प्रचारार्थ मूल्य ₹40
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹100 प्रचारार्थ मूल्य ₹60
पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹80 प्रचारार्थ मूल्य ₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹150 प्रचारार्थ मूल्य ₹100
स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8 — मुद्रित मूल्य ₹200 प्रचारार्थ मूल्य ₹120
उपहार संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹1100 प्रचारार्थ मूल्य ₹750

सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द — 250 160
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द — 300 200

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

ENHANCING TECHNOLOGY
EMPOWERING PEOPLE
ENABLING INNOVATION

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्योगिक क्षेत्र-1, नई दिल्ली-110028 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह